IMPACT FACTOR 7.50 (SJIAI)

बिहार शोध समागम
BIHAR SHODH SAMAAGAM

Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed /Refereed Open Access Journal
Vol. 4, Issue 2, April-june, 2026
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/
https://doi.org/10.5281/zenodo.21247005

ISSN : 3048-6971

छायावादयुगीन हिन्दी कविता में राष्ट्रीय चेतना

डॉ. दिव्या सिंह राजपुरोहित
सहायक आचार्य, हिंदी
श्री पारसमल बोहरा नेत्रहीन महाविद्यालय,जोधपुर

सारांश - छायावाद के प्रायः सभी कवियों ने देश के अतीत गौरव के प्रति अटूट श्रद्धा तो व्यक्त की ही है, साथ ही उनका यह दृढ़ विश्वास भी है कि शीघ्र ही देश पराधीनता और अत्याचार के दमनचक्र से मुक्त होगा और फिर से एक नयी, विराट और भव्य सामाजिक व्यवस्था का उदय होगा।

मुख्य बिंदु - छायावाद, हिंदी कविता,राष्ट्र प्रेम, मातृभूमि सम्मान, अतीत का गौरव, स्वाधीनता संग्राम में अवदान।

छायावाद नितान्त संघर्ष का युग रहा है। इस समय भारतीय जनजीवन साम्राज्यवादी अंग्रेजों, प्रजा विरोधी नीतियों से आक्रान्त था। भारतवर्ष पर अंग्रेजों से पहले कई विदेशियों ने आक्रमण किया, जिन्होंने भारत की संपदा को लूटा या फिर भारत में ही रह गए। लेकिन भारतवर्ष में रहते हुए वे इसी देश के होकर ही रह गए। हाँ, उनके धर्म को माननेवालों की अपेक्षा दूसरों को कम सुविधाएँ मिलती थी। फिर भी वे विदेशी होते हुए भी भारत के होकर रह गए। अर्थात् अपने देश में रहते हुए वे दूसरे देश के हित के बारे में नहीं सोचते थे। जबकि अंग्रेज भारत पर शासन करते हुए भी स्वयं के देश की उन्नति चाहते थे । उनकी शासन-व्यवस्था का एक ही मूल मन्त्र था, भारत का शोषण कर अपने देश को समृद्ध करना। ऐसी कूटनीतियों के कारण विद्रोह का स्वर भड़कना स्वाभाविक ही था। यह आक्रोश धीरे धीरे बढ़ने लगा, जिसने आगे चलकर स्वाधीनता-संग्राम का रूप धारण कर लिया, जिसकी बागडोर महात्मा गांधी के हाथों में आई। महात्मा गाँधी के नेतृत्व में असहयोग आन्दोलन चल पडा, जो नितांत सत्य और अहिंसा जैसे उदात्त व्रतों पर निर्भर था ।

छायावाद का साहित्य विषम संघर्ष का साहित्य है। इस काल के कवियों ने राष्ट्रीय चेतना के जागरण में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आ. नगेन्द्र के शब्दों में "इस युग के राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्य में दो भावनाएँ पूरी शक्ति के साथ व्यक्त हुई एक ओर तो कवियों ने भारत की आंतरिक विसंगतियों विषमताओं को दूर करने के लिए देश को आह्वान किया और दूसरी ओर जनता को विदेशी शासन से मुक्ति पाने के लिए स्वाधीनता संग्राम में कूद पड़ने की प्रेरणा दी।"[1] इस काल के राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा के कुछ कवि ऐसे थे, जिन्होंने केवल अपने साहित्य के एमएममाध्यम से राष्ट्र-प्रेम को ही मुखरित नहीं किया, वरन् आजादी की लडाई में भी बढ़-चढ़कर भाग लिया और कई बार जेल भी गए हैं। इसलिए उनकी राष्ट्रीय कविताओं में अनुभूति की सच्चाई के दर्शन होते हैं। इन कवियों में माखनलाल चतुर्वेदी, रामनरेश त्रिपाठी, बालकृष्ण शर्मा नवीन और सुभद्राकुमारी चौहान का नाम विशेष उल्लेखनीय है ।

इस युग के राष्ट्रीय काव्यधारा के सबसे शिरोमणि कवि माखनलाल चतुर्वेदी हैं, जिन्हें 'एक भारतीय आत्मा' का बिरूद भी मिला है। माखनलाल चतुर्वेदी की राष्ट्रीय भावना बहुमुखी है। "उन्होंने कविरूप में भावना के बहुरंगी पुष्पहार समर्पित करके ही सन्तोष नहीं किया, वरन् अनेक तरूणों में विद्रोह और देशानुराग की भावना जागृत कर एवं राष्ट्रीय आदोलनों को सक्रिय गति प्रदान कर कृष्ण मंदिर की यात्रा का भी सौभाग्य प्राप्त किया है। इससे उनकी राष्ट्रीय भावना अधिक बलवती हो गई है, जो हमें उनके काव्य में सर्वत्र दिखाई देती है।"[2] अपने संपूर्ण जीवनकाल में विशेष रूप से साहित्यिक जीवन काल में 'राष्ट्रदेवता' की आराधना करनेवाले इस 'भारतीय आत्मा' के दो कविता-संग्रह महत्वपूर्ण है, 'हिमकिरीटिनी' और 'हिमतरंगिणी'। इन दोनों कविता-संग्रहों में राष्ट्रीय चिंतन विषयक अमूल्य कविताएँ हैं। इनकी 'अमर राष्ट्र' कविता की कुछ पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं :

"मैं यह चला पत्थरों पर चढ़, मेरा दिलवर वहीं मिलेगा।
फेंक जला दे सोना-चाँदी, तभी क्रान्ति का सुमन खिलेगा।।
चट्टान चिंघाड़े हँस हँस, सागर गरजे मस्ताना-सा।
प्रलय-राग अपना भी उसमें, गूँथ चले ताना-बाना सा।।"[3]

माखनलाल चतुर्वेदी ने स्वाधीनता संग्राम में भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया है। अपने दीर्घ राजनीतिक जीवन के दौरान वे कई बार जेल भी गए हैं। उनकी सृजन यात्रा जेल में भी नहीं रूकी। बन्दी जीवन की यातनाओं का भी उन्होंने अपनी कविताओं में सजीव वर्णन किया है। जैसे 'कैदी और कोकिल' कविता :

"क्या ? देख न सकती जंजीरों का गहना ।
हथकड़ियाँ क्यों ? यह ब्रिटिश राज्य का गहना ।।
कोल्हू का चर्रक चूँ ? जीवन की तान ।
मिट्टी पर लिखे अँगुलियों ने क्या गान ?
हूँ मोट खींचता लगा पेट पर जूआ ।
खाली करता हूँ ब्रिटिश अकड़ का कुआ।"[4]

इन पंक्तियों में कवि की करुण पुकार सुनाई देती है। देश में ज्ञान-विज्ञान की क्षितिजों को खोलनेवाले, नये साधनों से युक्त इन साम्राज्यवादियों की चंगुल से भारत को मुक्त करना आसान नहीं था। अतः इस काल के कवियों ने अपनी कविता के माध्यम से प्रजा में जागरण एवं संघर्ष के भावों का संचार किया। साथ-साथ उन्होंने देश की प्रजा में यह समझाया कि मनुष्य असीम शक्ति का स्त्रोत है, आवश्यकता है अपनी आंतरिक शक्ति व उर्जा को पहचानें और आत्मविश्वास के साथ संघर्ष के लिए तैयार हो जाय । इस सन्दर्भ में बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' ने देश के युवानों को स्वाधीनता संग्राम में पूर्ण उत्साह के साथ अपना योगदान देने का आह्वान किया है:

"ओ भिखमंगे, अरे पराजित, ओ मजलूम, अरे चिरदोहित,
तू अखण्ड भण्डार शक्ति का, जाग अरे निद्रा सम्मोहित ।
प्राणों को तड़पानेवाली हुंकारों से जल-थल भर दे,
अंगारों के अंबारों में अपना ज्वलित फलीता धर दे।।"[5]

भारतवर्ष का अतीत अत्यंत गौरव-पूर्ण एवं प्रेरणास्पद रहा है। इसलिए स्वतंत्रता आंदोलन के समय अनेक साहित्यकारों ने अतीत का गौरवगान करते हुए भारतवर्ष की सोयी हुई राष्ट्रीय चेतना जागृत करने का प्रयास किया है। कवि 'नवीन' ने कहा है :

"कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ जिससे उथल-पुथल मच जाये,
एक हिलोर इधर से आये एक हिलोर उधर से आये,
प्राणों के लाले पड जायें, त्राहि त्राहि स्वर नभ में छाये,
नाश और सत्यानाशों का धुंआधार जग में छा जाये,
कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ जिससे उथल-पुथल मच जाये। "[6]

अतीत के गौरव की अभिव्यक्ति के साथ-साथ कवि नवीन ने भारतीय जन-मानस में जागरण के बीज भी अपनी कविताओं के माध्यम से बोये हैं। विशेषकर देश की आम जनता, मजदूर, किसान आदि की सोयी हुई आत्मा को जागृत कर स्वातंत्र्य संग्राम में कूद पड़ने का आह्वान कवि ने किया है। वे किसान-मजदूरों को ललकारते हुए कहते हैं कि शताब्दियों से शोषित, पददलित कृषक, तुझे कुशासन के विरुद्ध महाक्रान्ति का शंख फूंकना ही होगा ।

इस प्रकार बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' का सम्बन्ध राष्ट्रीयता से ही रहा, चाहे उनका काव्य हो या जीवन। कारण यह है कि 'नवीन' जी का जन्म जिस समय हुआ, वह समय संक्रांति काल का था। साहित्य और समाज दोनों में संक्रांति की स्थितियाँ थीं। चौदहवीं शताब्दि में भी संक्रांति काल आया था, जब कबीर जैसा महान क्रांतिकारी कवि पैदा हुआ था। उस कबीर के समान ही अक्खड़ और फक्कड़, युग की कटुता का विषपान करनेवाले कवि थे बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'।"[7] नवीन जी की कविता देश के जन-साधारण को पराधीन देश पर अपने प्राणों को न्यौछावर करने की प्रेरणा देती है।

छायावादयुगीन राष्ट्रीय काव्यधारा के कवियों में शियारामशण गुप्त का नाम विशेष उल्लेखनीय है। कवि को मातृभूमि विशेष प्रिय है, जिस भूमि पर भगवान भी अवतार ले चुके हैं। गुप्तजी भारतवर्ष के भव्य अतीत का गौरवगान करते हुए कहते हैं -

"संसार भर में यह हमारा देश सिरमौर था,
सौन्दर्य में सुख-शांति में ऐसा न कोई ओर था ।
निष्पक्ष होकर मानते हैं बात यह साक्षर सभी,
सर्वोच्च उन्नति के शिखर पर स्थित रहा था यह कभी।।"[8]

तो साथ-साथ देश की वर्तमान दुर्दशा को व्यक्त करते हुए कहते हैं -

"हमको नहीं है ज्ञान भी अब हाय ! निज उद्देश्य का
लेते सभी सह, है नहीं कुछ ध्यान भी निज क्लेश का ।
दिन गिन रहे हैं मौत के, उद्योग उदम छोड़ के,
बैठे हुए हैं मोह से आत्मीयता हम जोड़ के।।"[9]

छायावाद युग के महत्वपूर्ण कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' हैं। निराला जी के हृदय में देश के प्रति अटूट स्नेह था। देश की अपमानजनक स्थिति से निराला जी त्रस्त थे। राष्ट्र सम्बन्धी कविताओं में सबसे महत्वपूर्ण 'भारती-वंदना', 'जागो फिर एक बार' तथा 'वन्दना गीत' है। "अपने व्यक्तित्व की अतिशय संवेदनशीलता और परम्परा, देश-काल, वर्तमान और भविष्य के प्रति जितने सजग निराला दिखते हैं, वह उनकी काव्योपलब्धि का एक दूसरा पहलू है। देश, जाति और भारतवर्ष के वर्तमान अपमानजनक जीवन के प्रति उनके अन्तर में घोर विद्रोह की भावना भरी हुई है। इनकी अभिव्यक्ति उनकी एक कविता 'जागो फिर एक बार' में हुई है।"[10] 'जागो फिर एक बार' कविता में निराला जी देश के सोये हुए युवा धन को टटोलना चाहते हैं । वह पराधीन देश के युवानों से कहते हैं कि तुम फिर से एक बार जागो ! रात के बाद दिन और दिन के बाद रात हो रही है, समय बीतता जा रहा है, ऐसी पराधीनता में कई हजार वर्ष बीत चुके हैं, अब जागने की घड़ी आ चुकी है। कहते हैं :

"उगे अरूणाचल में रवि / आयी भारती-रति कवि-कण्ठ में,
क्षण क्षण में परिवर्तित / होते रहे प्रकृति-पट,
गया दिन, आयी रात, / गयी रात, खुला दिन,
ऐसे ही संसार के बीते दिन, पक्ष, मास,
वर्ष कितने ही हजार / जागो फिर एक बार ।"[11]

निराला के काव्य में असहयोग और आत्म-बलिदान के भावों की प्रधानता दिखाई देती है। इस युग के कवियों की सर्वप्रधान विशेषता मातृभूमि की महिमा का गान है, जिसमें निराला की कविता सर्वोपरि -सी जान पड़ती है। निराला ने भारतमाता का चित्र इन पंक्तियों में खींचा है:

"भारति, जय, विजय करे / कनक शस्य कमल धरे !
लंका पदतल - शतदल, / गर्जितोर्मि सागर जल
धोता शुचि चरण युगल / स्तव कर बहु अर्थ भरे !
मुकुट शुभ्र हिम तुषार / प्राण प्रणव ओंकार,

ध्वनित दिशाएँ उदार, । शतमुख शतरव मुखरे।"[12]

इस प्रकार की रचनाओं में देश की जनता में देश के प्रति प्रेम और भक्ति की भावनाएँ भरने का प्रयास किया गया। जिस देश की भूमि पर हमने प्रथम श्वास ली, जिस भूमि की धूल में पल कर हम बड़े हुए, उस भूमि के प्रति हमारी भक्ति होना अनिवार्य है।

इसके अतिरिक्त कविवर निराला जी ने वन्दना-गीतों के रूप में भारत के गौरवशाली अतीत की गाथाएँ अपने कई गीतों में गाई है। एक जगह पर निराला जी की निम्न प्रार्थना सुनने में आई, जिसमें मधुरता के साथ अतीत के गौरव की अभिव्यक्ति स्पष्ट दिखाई देती है:

"प्रिय स्वतन्त्र रव, अमृत-मंत्र नव भारत में भर दे !
नव गति, नव लय, ताल-छन्द नव...
नव नभ के नव विहग-वृन्द को
नव पर नव स्वर दे ! / वर दे ![13]

इस प्रकार निराला जी ने वर्तमान को अतीत से जोड़कर वर्तमान वातावरण में उत्साह और महानता का उद्द्बोध करने का प्रयास किया। यहाँ मातृ-वन्दना सम्बन्धी गीतों में कवि का अपना समस्त उत्सर्ग झलकता है । यद्यपि निराला जैसे प्रबुद्ध छायावादी कवियों की कविता का प्रमुख उद्देश्य केवल अतीत के गौरव का गान करना ही कैसी नहीं था, किन्तु कवि अपने युग की विविध विषमताओं और आकांक्षाओं के प्रति भी सजग रहे। इस युग के कवियों ने दीन-दुखियों के प्रति अपनी विशेष सहानुभूति व्यक्त की है। यहाँ यह भाव भी व्यक्त किया गया कि ईश्वर दीन-दुखियों के हृदय में निवास करता है। इसलिए ईश्वर की भक्ति सिर्फ दीन-दुखियों की सेवा मात्र से हो सकती है। इस प्रकार इन कवियों का ध्यान अतीत के गौरव की गाथाओं के अतिरिक्त सामाजिक समस्याओं व विषमताओं की ओर भी गया ।

इन कवियों की कोटि में कविवर रामनरेश त्रिपाठी का नाम उल्लेखनीय है। त्रिपाठी जी ने अपनी कविताओं में आध्यात्मिकता और सामाजिकता का अद्भुत समन्वय किया है। यहाँ उल्लेखनीय है कि भारतवर्ष किसी के भी अधिकारों को छीनने में नहीं मानता। हमारा देश तो केवल स्वराज्य की माँग करता है। अपने देश में अपना राज्य न कि विदेशियों का राज्य । कविवर रामनरेश त्रिपाठी ने 'स्वशासन' का समर्थन करते हुए एक जगह पर कहा है:

"दुःखदायी शासन से अपनी सारी शक्ति हटा लो,
निज सुख दुःख का अपने उपर सारा भार संभालो ।
अपना शासन आप करो तुम, यहीं शांति है सुख है,
पराधिनता से बढ़कर जग में न दूसरा दुःख है।"[14]

इस प्रकार कविवर रामनरेश त्रिपाठी जी की कविता भी कविकर्म की अपेक्षा राष्ट्रीय आकांक्षाओं से भरी पडी है। असहयोग और आत्मबलिदान जैसे महत्वपूर्ण मूल्यों को कविता में विशेष स्थान दिया गया है।

स्पष्ट है कि इस काल के कवियों ने जनता को अंग्रेज सरकार से असहयोग करने के लिए विशेष प्रेरित किया। असहयोग के साथ-साथ कवियों ने अंग्रेजों की दमन-नीति को सहने के लिए सहिष्णुता के भाव भी जागृत किये । इस सन्दर्भ में सुभद्राकुमारी चौहान का नाम विशेष उल्लेखनीय है। सुभद्राकुमारी चौहान जेल-वास भोगनेवाले कवियों की कोटि में आती हैं, इसलिए उनकी कविता में राष्ट्रीयता के भाव होना स्वाभाविक ही है। उनकी कविताओं में अनुभूति की सच्चाई परिलक्षित होती है। स्वातंत्र्य संग्राम के वीर योद्धा को शांतिपूर्ण आंदोलन में यदि बलि पर चढ़ने की आवश्यकता आ पड़े तो भी तैयार रहने के लिए कवयित्री कहती हैं। यहाँ कवयित्री देश से पाप, अत्याचार के नाश के लिए आतुर दिखाई देती है। राष्ट्रीय भावनाओं की केन्द्रीय कविता, जिसके कारण कवयित्री को विशेष प्रसिद्धि प्राप्त है, बल्कि यों कहिए कि हर एक भारतवासी को जुबानी याद है 'झाँसी की रानी'। जिसमें झाँसी की वीरांगना लक्ष्मीबाई की वीरता का वर्णन है। इस कविता के उल्लेख बिना राष्ट्रीय चेतना की खोज अधूरी समझी जायेगी।

सुभद्राकुमारी चौहान ने 'झाँसी की रानी' कविता के माध्यम से प्रत्येक भारतवासी के हृदय में राष्ट्रीय भाव-तंत्रियों को झंकृत करने का सफल प्रयास किया है। देश-प्रेम की भावना से ओतप्रोत कविता 'झाँसी की रानी' की कुछ पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं :

"सिंहासन हिल उठे, राजवंशों ने भृकुटी तानी थी,
बूढ़े भारत में भी आयी फिर से नयी जवानी थी,
गुमी हुई आज़ादी की कीमत सबने पहचानी थी,
दूर फिरंगी को करने की सब ने मन में ठानी थी,
चमक उठी सन् सत्तावन में / वह तलवार पुरानी थी।
बुन्देले हरबोल के मुँह / हमने सुनी कहानी थी
खूब लड़ी मर्दानी वह तो / झाँसी वाली रानी थी।"[15]

सुभद्राकुमारी चौहान की कविता राष्ट्रीय भावनाओं से ओतप्रोत है। छायावादयुगीन राष्ट्रीय काव्यधारा की प्रमुख कवयित्री के रूप में उनका नाम विशेष उल्लेखनीय है। स्वातंत्र्य संग्राम में अपने प्राणों को न्यौछावर करनेवाले वीरों को अपनी कविता में विशेष स्थान दिया है।

"वीरों का कैसा हो वसन्त ? / आ रही हिमाचल से पुकार
है उदधि गरजता बार-बार / प्राची पश्चिम भू नभ अपार
सब पूछ रहे हैं दिग दिगंत / वीरों का कैसा हो वसन्त ?"[16]

इस प्रकार छायावादयुगीन कविता की राष्ट्रीय काव्यधारा ने भारतीय प्रजा में देश-प्रेम व आत्म-विश्वास को बढ़ाने का कार्य किया है। स्पष्ट है कि प्रत्येक भारतीय का कर्तव्य तत्कालीन युग में स्वाधीनता की साधना करना था। "इस काल के प्रायः सभी कवियों ने देश के अतीत गौरव के प्रति अटूट श्रद्धा तो व्यक्त की ही है, साथ ही उनका यह दृढ़ विश्वास भी है कि शीघ्र ही देश पराधीनता और अत्याचार के दमनचक्र से मुक्त होगा और फिर से एक नयी, विराट और भव्य सामाजिक व्यवस्था का उदय होगा।"[17] अतः कहा जा सकता है कि आलोच्य युग स्वाधीनता-संघर्ष के चरमोत्कर्ष का काल है। भारतीय जन-मानस में देश के स्वातंत्र्य का प्रश्न आग की तरह सुलग रहा था। चारों ओर महात्मा गाँधी के अहिंसक आंदोलनों का जोर था तो दूसरी ओर क्रान्तिकारियों की हिंसक प्रवृत्तियाँ भी जोरों-शोरों से चल रही थीं। अंग्रेजों के सामूहिक बहिष्कार की इस मुहिम में छायावादयुगीन कविता भी अछूती नहीं रही। उपर्युक्त उल्लेखनीय कवियों ने अपनी कविता के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना के जागरण का महत्वपूर्ण कार्य किया। देश की जनता को, आजादी के दिवानों को स्वतंत्रता की बलिवेदी पर अपने प्राणों का बलिदान देने की प्रेरणा दी। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि आलोच्य युग के कवियों ने राष्ट्रीय चेतनार्थ कविताएँ लिखकर अपना सही-सही राष्ट्रधर्म निभाया ।

सन्दर्भ:-

1. डॉ. नगेन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ. 541
2. डॉ. एस.पी. तिवारी, विशिष्ट साहित्यिक निबंध, पृ. 31
3. श्रीकान्त जोशी (सं.) माखनलाल चतुर्वेदी समग्र कविताएँ, पृ. 210
4. वही, पृ. 153
5. नरेशचंद्र चतुर्वेदी (सं.), चर्चित राष्ट्रीय गीत, पृ. 241
6. वही, पृ. 235
7. डॉ. नरेश मिश्र (सं.), आधुनिक हिन्दी राष्ट्रीय काव्यधारा : राष्ट्रीयता और मानवतावाद, पृ. 189
8. नरेशचंद्र चतुर्वेदी (सं.), चर्चित राष्ट्रीय गीत, पृ. 202
9. वही, पृ. 203
10. वाचस्पति पाठक (सं.) प्रसाद, निराला, पन्त, महादेवी की श्रेष्ठ रचनाएँ, पृ. 33
11. वही, पृ. 104
12. वही, पृ. 99
13. वही, भूमिका से, पृ. 33
14. रामनरेश त्रिपाठी (सं.), चर्चित राष्ट्रीय गीत-1, पृ. 174
15. नरेशचंद्र चतुर्वेदी (सं.), चर्चित राष्ट्रीय गीत-2, पृ. 86
16. वही, पृ. 111
17. डॉ. नगेन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ. 545